

नीचे हिला सकता है, इसका शब्द बड़ा कर्कश होता है और सुनने में 'क क तु अ' की तरह मालूम होता है।

काकातूआ पुं. (देश.) दे. काकातुआ।

काकिणी स्त्री. (तत्.) 1. घुंघची, गुंजा 2. पण का चतुर्थ भाग 3. माशे का चौथाई भाग 4. कौड़ी।

काकी स्त्री. (तत्.) कौए की मादा, चाची।

काकु पुं. (तत्.) 1. छिपी हुई चुटीली बात, व्यंग्य, ताना उदा. राम बिरह दशरथ दुखित कहत कैकयी काकु, अलंकार में वक्रोक्ति के दो भेदों में से एक जिसमें शब्दों के अन्यार्थ या अनेकार्थ से नहीं बल्कि ध्वनि ही से दूसरा अभिप्राय ग्रहण किया जाता है जैसे-क्या वह अब भी न समझेगा? अर्थात् अवश्य समझेगा 3. अस्पष्टकथन 4. जिह्वा पर बल देना।

काकोलूकीय पुं. (तत्.) 1. काक और उलूक का सा सहज बैर 2. पंचतंत्र का तीसरा तंत्र यो. काकोलूकीय तंत्र-पंचतंत्र का तीसरा तंत्र, काकोलूकीय न्याय-वह न्याय जहाँ कौआ और उल्लू की सहज शत्रुता की स्थिति हो।

काग पुं. (तद्.) कौआ, वायस मुहा. काग के गले की घाँटी उड़ाना-किसी के आने का शकुन विचारना पुं. (अं.कार्क) 1. बोतल की डाट जो काग नामक पेड़ की छाल से बनती है 2. बलूत जाति का एक पेड़।

कागज पुं. (अर.) 1. सन, रुई, पटुए, बाँस, लकड़ी आदि को पीस कर या सड़ा कर उसकी लुगदी से बनाया हुआ पत्र जिस पर अक्षर छापे जाते हैं।

कागजपत्र पुं. (अर+तत्.) 1. किसी मामले से संबंधित, लिखे हुए कागज, प्रामाणिक लेख, कागजात, दस्तावेज जैसे- संगत कागज पत्रों के साथ मसौदा प्रस्तुत किया जाए मुहा. कागज काला करना- व्यर्थ की बातें लिखना; कागज रंगना- कागज पर कुछ लिखना; कागज की नाव- क्षणभंगुर वस्तु; कागज की लेखी-ग्रंथों में लिखी बातें; उदा. मैं कहता हूँ आखिन देखी, तू कहता है कागज की लेखी -कबीर कागज दौड़ाना, कागजी घोड़े दौड़ाना- खूब लिखा पढ़ी

करना; कागज पर चढ़ाना- कहीं लिख लेना, टाँकना; 2. लिखा हुआ कागज, लेख, प्रामाणिक लेख 3. संवाद पत्र, समाचार पत्र, अखबार 4. नोट

कागजात पुं. (फा.) 1. कागज का बहुवचन 2. दे. कागजपत्र।

कागजी वि. (फा.) 1. कागज का 2. जो कागज की तरह पतला हो जैसे- कागजी नींबू, कागजी बादाम। अर्थात् (पतले छिलके वाला)।

कागजी कार्रवाई पुं. (अर.+फा) कार्रवाई, लिखा-पढ़ी।

कागजी बादाम पुं. (फा.) एक प्रकार का बढिया बादाम।

कागजी सबूत पुं. (फा.+अर.) कागज पर लिखा हुआ सबूत, लिखित प्रमाण।

कागारौल पुं. (तद्.) हल्ला, शोरगुल, कौआँ की काँव काँव।

काचक पुं. (तत्.) 1. शीशा, काँच 2. पत्थर 3. खारी मिट्टी।

काछ पुं. (तद्.) 1. पेड़ और जांघ के जोड़ पर या उसके कुछ नीचे तक का स्थान 2. धोती का वह भाग जो इस स्थान पर से होकर पीछे खोँसा जाता है, धोती की लांग 3. अभिनय के लिए नटों का वेश।

काछना स.क्रि. (देश.) 1. कमर में लपेटे हुए वस्त्र के लटकते भाग को जाँघों पर से ले जाकर पीछे कस कर बाँधना 2. बनाना, पहनना उदा. गौर किशोर वेष वर काछे -तुलसी 3. शोभित होना।

काछनी स्त्री. (देश.) कसकर और कुछ ऊपर चढ़ा कर पहनी हुई धोती जिसकी दोनों लांगें पीछे खोँसी जाती हैं, कछनी उदा. सीस मुकुट कटि काछनी धर मुरली कर माल -बिहारी

काछा पुं. (तद्.) 1. कसकर और कुछ ऊपर चढ़ा कर पहनी हुई धोती जिसकी दोनों लांगें पीछे